(सत्संदेश मार्च 1956 में प्रकाशित प्रवचन)

रूहानी सत्संग No. K-08

बिरवे बन फीका त्याग री सखिए

(1) बिरवे बन फीका त्याग री सखिये, नाम महारस पियो॥

श्री गुरु अर्जुन साहब की यह वाणी है जिसका शब्द इस समय आ रहा है। अनुभवी पुरुषों की वाणी हमेशा पराविद्या का वर्णन करती रही है। पराविद्या कहो, आत्म अनुभव कहो, Self Knowledge और God knowledge (अपने आपको जानना और प्रभु को पहचानना) कहो, उन्होंने हमेशा इसी विषय पर ज़ोर दिया है। हम आत्मा हैं। आत्मा उस प्रभु का अंश है। प्रभु महाचेतन का समुद्र है। हमारी आत्मा उस समुद्र का कतरा है। यह भी चेतन स्वरूप है, Conscious entity है। इसमें भी छोटे पैमाने में वही गुण विद्यमान हैं जो परामात्मा में हैं। शरीर रूपी रथ में यह बैठा है। बुद्धि इसकी रथवान है, मन लगाम है और इन्द्रियाँ रूपी घोड़े इसे भोगों रूपी खेतों में लिए जा रहे हैं। यह इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैल रहा है। यह इतना बाहरमुखी हो गया है कि अपने आपको भूल गया है। परमात्मा आनन्दमय है। वह शान्ति का सागर है, निजानन्द का भण्डार है। आत्मा भी वही सारे गुण लिए हुए हैं। यह भी आनन्दमय है। यह भी शान्ति का, निजानन्द का भण्डार है, मगर इस वक्त इसे अपनी सूझत नहीं रही। इसका कारण यह है कि यह मन का रूप होकर, इन्द्रियों के घाट पर जिस्म और जिस्मानियत का रूप बन कर बाहर दुनिया में फैल रही है। इसका रुख अपनी तरफ नहीं रहा। यह बाहर फैलाव में जा रही है। बाहर जो रस इसे आ रहा है वह इसका अपना अक्स (प्रतिबिम्ब) है। इसका अपना Reflection है। बाहर जो पदार्थ हैं यह उनका रस नहीं। यह बाहरमुखी कैसे हो गया? मन के अधीन होकर। यह मन के अधीन है, मन इन्द्रियों के अधीन है। इन्द्रियों के घाट पर बैठा यह रस ले रहा है कभी एक इन्द्री के घाट पर, कभी दूसरी इन्द्री के घाट

पर। यह रस बाहर नहीं है। यह रस इसकी अपनी एकाग्रता का रस है। जहां एकाग्रता होती है वहां रस आने लगता है। यह इसका अपना रस है। उस चीज़ का रस नहीं जिसके साथ यह लगा हुआ है। एक आदमी सुन्दर दृश्य देख रहा है। वह उसमें तन्मय है, लीन है, देख-देख कर खुश हो रहा है। उसे आनन्द आ रहा है। वह समझता है तमाशे में रस है। आनन्द उस वस्तु में नहीं जिससे यह जुड़ा हुआ है। यदि इस चीज़ को खोलकर देखा जाए, Analyse किया जाये तो जो आनन्द उसे आ रहा है वह उसे अपनी एकाग्रता का आनन्द है।

सो गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैं कि विषय विकार का वन (जंगल) फीका है। इसमें रस नहीं।

विषय विकार क्या है? किसी इन्द्री के घाट पर लम्पट होना। नासिका की इन्द्री सूंघने के लिए है। इसी तरह स्पर्श की इन्द्री, ज़बान की इन्द्री, काम की इन्द्री वगैरह। इनमें से किसी इन्द्री के घाट पर लम्पट होना विषय है। संखिया मात्रा से अधिक खाया जाए तो मनुष्य मर जाता है। वही संखिया नियमित मात्रा में और विधिपूर्वक सेवन किया जाए तो शरीर को बल देता है। यही एक भारी धोखा है, जिसमें दुनिया बही जा रही है। हम समझते हैं बाहर विषय विकार में रस है। हम समझते हैं हम 'भोग' भोग रहे हैं। वास्तव में 'भोग' हमें भोग रहा है। कुछ समय तक 'भोग' भोगते रहो। इसके बाद तुम 'भोगने' के काबिल ही न रहोगे। सन्त महात्मा हमें असलियत का ध्यान दिलाते हैं। सो फरमाते हैं श्री अर्जुन साहब कि इन्द्रियों के भोग और विषय विकार सब फीके हैं। इस तरफ से हटो अगर निजानन्द को पाना चाहते हो। आनन्द का सरोवर तुम्हारा अपना आप है। हम बाहर इन्द्रियों के घाट पर लम्पट हो रहे हैं। इन्द्रियों से काम लेना इन्हें बरतना और बात है हम तो इनमें लम्पट हो रहे हैं। अभी कबीर साहब का शब्द पढ़ा गया था कि जितने भी देहधारी संसार

में हैं उन सबको दुखी ही देखा। घर-गृहस्थी भी दुखी और घर बार छोड़ कर जो जंगलों में चले गए वे भी दुखी। इसका कारण क्या है?

St. Augustine (सेन्ट आगस्टिन) ईसाईयों में एक महात्मा हो गुज़रे हैं। वह फरमाते हैं कि जिन चीज़ों का इन्सान को भोग लेना था, उन्हें वह बरतने लगा और जिन्हें बरतना था उन्हें वह भोगने लग गया। हमारी आत्मा चेतन है। उसे महाचेतन प्रभु का भोग लेना था लेकिन उसके बारे में हम केवल किताबें पढ़ छोड़ते हैं। जो चीज़ें हमें बरतने के लिए मिली थीं उन्हें हम भोग रहे हैं। यह शरीर, ये इन्द्रियों के घाट, हमें बरतने के लिए मिले थे। इनसे हमें काम लेना था। हम इनमें लम्पट हो रहे हैं। इसीलिए हम दुखी हैं। इन्द्रियों के घाट पर हमें जो रस आ रहा है वह रस हमारा अपना रस है। कुत्ता किस मज़े से मस्त होकर हड्डी खाता है। वह समझता है हड्डी में रस है। हड्डी में रस नहीं ! उसकी अपनी ज़बान से जो लह् टपकता है यह उसका रस है,वह समझता है हड्डी में रस है। यही हाल इन्द्रियों के रसों और भोगों का है। यह एक बात अगर समझ में आ जाए तो काम बन जाए। इन्द्रियां हमें बरतने के लिए मिली हैं। इनसे हमें काम लेना है। आत्मा चेतन है। उसे महाचेतन प्रभु का भोग लेना है। उसे पाकर ही यह शान्ति प्राप्त कर सकता है। लेकिन जब तक हम इन्द्रियों के रसों भोगों से हटते नहीं, न हमें अपनी खबर हो सकती है न प्रभु की। कवि कहता है:

हम खुदा ख़ाही व हम दुनियाए दूं,
ईं ख़याल अस्तो, महाल अस्तो, जनूं।

अर्थात् दुनिया में भी फैला रहे और साथ ही खुदा को भी पाना चाहे यह असम्भव है, तेरा यह विचार पागलपन है। जब तक यह इन्द्रियों के घाट से हटता नहीं इसे अपनी होश नहीं आएगी और जब तक अपनी होश न आए उस वक्त तक प्रभु को पाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। किसी भी महात्मा की वाणी ले लो। उसमें पहला कदम यही बताया गया है। बाहर से हटो। अन्तर्मुख होकर अपने आपको जानो। यह पराविद्या का सवाल है। अपराविद्या के जितने साधन हैं, जितने भी रस्म-रिवाज़ हैं, जप-तप संयम हैं, वे सब इन्द्रियों के घाट पर किए जाते हैं। समाजों का

काम दाई का है। वह बच्चा पैदा कराने में सहायक तो होती है पर आप बच्चा नहीं जनती। समाज धर्म के नियम, रस्म-रिवाज़, सदाचार का जीवन, परमार्थ को पाने के लिए ज़मीन की तैयारी है।

Where the world's philosophies end there the religion starts. परमार्थ की क, ख वहां से शुरू होती है जहां संसार की सारी फिलासफियां (सिद्धान्त) खत्म हो जाती हैं। इन्द्रियों का जितना ज्ञान है वह सब दृश्य का ज्ञान है। हमें इससे ऊपर अदृश्य की ओर जाना है। सो फरमाते हैं श्री गुरु अर्जुन साहब कि तू जो विषय-विकार में लम्पट हो रहा है वे सब फीके हैं, उनमें रस नहीं। तू अपना रस आप ले रहा है, अपना ही लह् चाट कर मस्त हो रहा है। फिर यह जाए कहाँ? फरमाते हैं, तेरे अन्तर में नाम का महारस है। तू चेतन है। तुझे शान्ति मिलेगी तो महाचेतन से लगकर, नाम से, परमात्मा परिपूर्ण से लगकर ही मिलेगी। वह नाम, जिसे God in action power कहा है, वह सत्ता है जो खण्डों ब्रह्मण्डों को बनाने वाली है और जो उन्हें धारण किए हुए है। वह महाचेतन की लहर है। परमात्मा को महाचेतन का सागर समझ लो। उसमें जो लहरें उठ रही हैं उन्हें नाम समझ लो। हमारा अस्तित्व जो है उसे बूंद समझ लो, उस सागर की। हमारी आत्मा ने भोग लेना था परमात्मा परिपूर्ण का God in action power का, जिसे नाम कहा है। अक्षरी नाम जो ऋषियों, मुनियों महात्माओं ने उसके रखे हैं वह उस नाम पावर का बोध कराने के लिए, हमें समझाने के लिए रखे हैं। उस नाम पावर में महारस है। परमात्मा आनन्द का सागर है। आत्मा में भी वही गुण हैं। यह भी आनन्दमय है। चेतन को ज़्यादा रस मिलेगा तो चेतन के साथ लगने से ही मिलेगा, जड़ पदार्थों में नहीं मिलेगा। जड़ पदार्थों में जो रस आ रहा है यह हमारी चित्त की एकाग्रता का रस है। इसने भोग लेना था परमात्मा परिपूर्ण का जिसका Divine link (दिव्य लिंक) घट-घट में है। वह रमी हुई ताकत जो कण कण में समा रही है वह हमारी आत्मा की आत्मा है। उसी के आधार पर शरीर के साथ आत्मा का सम्बन्ध बना हुआ है। वह सत्ता शरीर से खींच ली जाये तो शरीर की प्रलय हो जाती है। वह ताकत जिसका दिव्य अंश शरीर में है, खण्डों-ब्रह्मण्डों को भी लिए खड़ी है। खण्डों ब्रह्मण्डों

से जब वह ताकत खींच ली जाये तो प्रलय हो जाती है। सो फरमाते हैं, उस नाम पावर में महारस है, तू उसका रस ले। बूंद को लहर मिल जाये तो वह Enliven होगी, सुरजीत होगी। लहर से मिलकर वह दरिया में लीन हो जायेगी, उसमें समा जायेगी। जो सुख बूंद को लहर के साथ मिलने में है वह बाहर मिट्टी में नहीं। वह तो खुश्क है। सो फरमाते हैं, यह फीका जंगल है विषय विकार का, इसमें सुख नहीं। इससे हट और अपनी आत्मा को नाम के साथ जोड़ जिसका Divine link सिलसिला, घट-घट में है। उसमें महारस है। उसके साथ लग कर तू शान्ति को पा जायेगा। बुल्लेशाह से यही सवाल पूछा गया तो उन्होंने फरमायाः

बुल्लेया रब दा की पावणा, इधरों पटणा ते ओधर लावणा।

इसे इन्द्रियों के घाट के भोगों से हटा कर उधर परमात्मा के साथ जोड़ दो। हज़ूर स्वामी जी महाराज ने स्पष्ट शब्दों में बताया कि ऐ भाईयों, सारी दुनिया के लोगों की सुरत (आत्म) इन्द्रियों के भोगों में लम्पट हो रही है। तुम में से कोई ऐसा भी है जो अपनी सुरत को नाम से जोड़ ले?

जोड़ो री कोई सुरत नाम से

यह सुरत एक जगह पर नहीं, जगह-जगह लगी हुई है। कहीं इन्द्रियों के रसों भोगों में, कहीं धन-दौलत, जायदादों में, कहीं बाल-बच्चों में। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि तुम में से कोई अपनी सुरत नाम से भी तो जोड़े। नाम का रस आने लगा तो बाहर इन्द्रियों के भोगों की असलियत खुल जायेगी। अब तो मन को अन्तर जाते हुए मौत दिखाई देती है, फिर उसे बाहर खेंचोगे भी तो वह बाहर नहीं जायेगा। महात्मा की कृपा से अन्तर में नाम का परिचय, उसका Contact (सम्पर्क) मिल जाये, फिर उसका थोड़ा रस आने लग जाए तो बाहर के सारे रस फीके पड़ जायेंगे। लोग कहते हैं, घर-बार छोड़ कर जंगलों में जाओ। घर-बार छोड़ने या जंगलों में जाने की ज़रूरत नहीं। घरों में रहो लेकिन किसी पूर्ण महात्मा से सम्बन्ध रखो।

पूरा सतगुरु भेटिये पूरी होवै जुगत॥
हसन्देयां, खेलन्देयां, पहनन्देयां, खावंदेयां विच्चे होवै मुक्त॥

घर गृहस्थी में रहते हुए, लोगों के सारे काम करते हुए यह काम हो सकता है। केवल Inversion का, बाहर से हटकर अन्तर्मुख होने का सवाल है, उस नाम पावर से लगने का सवाल है। जिसका Divine link (दिव्य लिंक) घट-घट में है। बाहर से हटना पहला कदम है। जब तक यह बाहर से हटता नहीं इसे अपनी सूझत नहीं मिलती। सो श्री गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैं कि ऐ आत्मा, यह विषय विकारों का वन (जंगल) फीका है। इन चीज़ों में तुझे जो रस आ रहा है यह तेरा अपना रस है। इन चीज़ों में रस नहीं। तू महारस लेना चाहता है तो बाहर से ध्यान हटा। तेरे अन्तर में नाम है जिसका दिव्य अंश घट-घट में है। उसके साथ लगने से तुझे महारस मिलेगा।

जब ओह रस आवा, एह रस नहीं भावा॥

उस रस को पाकर बाहर के सारे रस फीके पड़ जायेंगे। बड़े प्यार से समझा रहे हैं। बड़ी हमदर्दी करते हैं कि देख, तू भूला पड़ा है। तू स्वयं आनन्दस्वरूप है। यदि परमात्मा से लग जाए तो महारस को पा जाए। बाहर दुनिया के रसों भोगों में लम्पट होकर क्यों दुखी हो रहा है।

(2) बिन रस चाखे बुड्ड गई सगली, सुखी न होवत जियो॥

फरमाते हैं, इस रस को चखे बिना हमारी जीवन रूपी नैया संसार सागर में डूबी जा रही है। यही इन्द्रियों के घाट के जो रस हैं, सब उसमें डूबे हुए हैं। अगर यह इनसे ऊपर आना सीख जाए, अन्तर में नाम का रस इसे मिल जाए तो यह संसार सागर में गोते न खाए, बार-बार जन्म मरन में न आए। 'जहाँ आसा तहां बासा'। अगर यह जीते जी इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाए और अन्तर में उस महारस को पा जाए तो बाहर दुनिया के सारे रस फीके पड़ जाएंगे। फिर वह जन्म-मरन में क्यों आएगा? सो फरमाते हैं कि इस रस को चखे बिना हमारी जीवन रूपी नैया संसार सागर में डूबी जाती है। श्री गुरु नानक साहब ने एक बार फरमायाः

नानक दुखिया सब संसार

पूछा महाराज, कोई सुखी भी है?

फरमाया, हाँ है।

सो सुखिया जिस नाम आधार

जिस आत्मा को नाम का आधार है वही सुखी है इस संसार में बाकी सब दुखी हैं। जो सुख हम इन्द्रियों के घाट पर बैठे हुए प्रतीत कर रहे हैं वह हमारे अपने आप का अक्स है, हमारा अपना Reflection है, सुख बाहर किसी चीज़ में नहीं। वह तो हमारे अन्दर है। जहां सुरत की एकाग्रता, Concentration है वहां सुख है। अगर हमारी सुरत किसी ऐसी चीज़ से लग जाए जो अविनाशी हो तोः

ना ओह मरे ना होवे सोग

न सुरत उखड़ेगी न दुख होगा। यही हज़ूर स्वामी जी महाराज ने फरमाया इस मज़मून की व्याख्या करते हुए कि हम दुखी क्यों हैं? फरमाते हैंः

सुरत तू दुखी रहे हम जानी।
जा दिन से हैं शब्द विसारा मन संग यारी ठानी॥

कि ऐ सुरत, ऐ आत्मा, हम देख रहे हैं कि तू दुखी है। कब से? जब से नाम पावर से, जिसे शब्द करके भी बखान किया गया है, तू दूर हो गई और मन से तूने यारी लगा ली। आत्मा मन के अधीन हो गई। मन को इन्द्रियों के भोग खेंच रहे हैं। अब हम सुखी होना चाहें तो क्या करें? हमें Invert होना पड़ेगा, बाहर से हटकर अन्तर्मुख नाम से लगना होगा। नाम में महारस है। उसे पाकर बाहर के रस, जो मन इन्द्रियों के घाट पर ले रहा है, वे सारे रस फीके पड़ जायेंगे। जब तक हम इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, हम दुखी रहेंगे। जब हम इन्द्रियों के घाट के विषय विकार से हटेंगे तभी हमें अपने आपे का ज्ञान होगा और तभी हम सुखी हो सकते हैं।

(3) मान महत सकत न काई, साधां दासी थियो।

अब फरमाते हैं कि नाम का महारस कहां मिलता है? फरमाते हैं यह मान-बड़ाई का मज़मून नहीं। न यहाँ महत्तता काम करेगी, न दुनिया की कोई सामर्थ्य काम करेगी। हकूमत, ताकत, दौलत, इल्म, मान बड़ाई, महत्तता सब होते हुए भी उस चीज़ को पा नहीं सकते। उसे लेना है तो साधुओं के दास बनो। यह दौलत किसी साधु से मिलेगी। साधु किसी

भेस का नाम नहीं। साधु किसी ऐसी हस्ती का नाम है जिसके अन्दर में परमात्मा प्रकट है, जिसकी सुरत, आत्मा मन इन्द्रियों से आज़ाद होकर अपने आपको जान चुकी और प्रभु को पा चुकी है, जिसे त्रिगुणातीत अवस्था प्राप्त है उसका नाम साधु है।

साध की उपमा तेह गुण से दूर॥

(गुरबाणी)

स्थूल, सूक्ष्म, कारण, तीनों ग़िलाफ़ जिसकी रूह से उतर गए, जो त्रिगुणातीत हो गया, वह साधु है।

प्रभ जी बसे साथ की रसना॥

उसकी ज़बान से खुद मालिक बोल रहा है। श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं:

जैसे में आवे खसम की बाणी, तैसड़ा करी ज्ञान वे लालो॥

जैसी धारा अन्तर से आती है, वह कहता चला जाता है। वह मन बुद्धि के घाट पर नहीं बोलता। एमरसन कहता है कि जो विचार बिना सोचे समझे, अन्तर से अपने आप चले आते हैं वे पूर्ण होते हैं, They are always perfect. सो फरमाते हैं कि नाम के महारस को पाने के लिए किसी ऐसे अनुभवी साधु के पास जाओ जो त्रिगुणातीत अवस्था को प्राप्त कर चुका है। वह रस है कहाँ? गुरबाणी कहती है:

नौ निध अमृत प्रभ का नाम, देही में इसका बिसराम॥

नौ निधियां, नौ किस्म की खुशियां है संसार में। इन सब खुशियों को देने वाला वह अमृत (अमर कर देने वाला) नाम घट-घट में व्यापक है। हर आदमी के अन्तर में उसका दिव्य अंश, Divine link मौजूद है। वह हमारी आत्मा की आत्मा है। उसके आधार पर हमारी आत्मा का शरीर से सम्बन्ध बना हुआ है। फिर कहा है:

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा॥

(गुरबाणी)

अर्थात् वह इन्द्रियों का विषय नहीं। इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर उसका परिचय मिलता है। जो उससे जुड़ा हुआ है वह तुम्हें भी इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर उससे जोड़ सकता है।

राम नाम कीर्तन रत्नवत्थ, हर साधु पास रखीजे॥
जो बचन सत सत कर माने, तिस आगे काढ कढीजै॥

(गुरबाणी)

अर्थात् हीरे जवाहरात से कीमती वह अखंड कीर्तन जो घट-घट में हो रहा है, परमात्मा ने उसकी कुंजी साधु के पास रखी है। जो उसके वचनों को सत् करके मानता है, उसे वह नाम का परिचय, उसका अनुभव देता है। उसमें धुनि है, Sound principle है। हर वक्त अपने आप वह धुनि हो रही है।

पूर रही दिवस और रात

24 घंटे वह धुनि, वह आकाशवाणी, वह श्रुति हो रही है, अपने आप हो रही है। वह शब्द, वह नाद, वह कलमा, वह उद्गीत यदि कान खुल जाए तो हर वक्त सुनाई देगा।

अखंड कीर्तन तिन भोजन चूरा, कहो नानक जाको सत्गुरु पूरा॥

वह अखंड कीर्तन जो अपने आप हो रहा है, वह उनकी आत्मा का भोजन है जिन्हें पूरा सत्गुरु मिला, वह अनुभवी महात्मा मिला जो सत् पद को पा चुका है। केवल वही इस दौलत को पा सकते हैं, दूसरे नहीं। यही श्री गुरु अर्जुन साहब फरमा रहे हैं कि यह मान बड़ाई और ज़बरदस्ती का मज़मून नहीं। इस दौलत को पाना है तो दास बनो। दासाभाव लेकर साधु के पास जाओ। हम उसके पास जाते भी हैं तो अपनी अकड़ लेकर।

बीस बिसवे गुर का मत माने, तौ परमेस्वर की गत जाने॥

अनुभवी पुरुष क्या कहता है? वह कहता है, नेक पाक बनो, सदाचार का जीवन व्यतीत करो। रोज़ अभ्यास करो। यह इन्द्रियों का घाट छोड़ता नहीं। हर वक्त ज़हर खाए जा रहा है। अभ्यास कैसे बने? हमारे हज़ूर फरमाया करते थे, एक आदमी ज़हर खा रहा है। उससे कड़वल पड़ते हैं तो हाय-हाय करता है। फिर भी और ज़हर खाए चला जाता है। हाय-हाय भी करता है और ज़हर भी खाए चला जाता है। यह हमारी भी हालत है।

सो फरमाते हैं यह ज़ोर ज़बरदस्ती का मज़मून नहीं। बाहर किसी चीज़ में Perfection (सम्पूर्णता) भी हासिल कर लिया तो बना क्या?

कानपुर का ज़िक्र है। एक भाई प्राणों का अभ्यास करते थे। चार टन वज़न की लारी छाती पर से गुज़ार कर लैक्चर देते थे। मैंने पूछा आपको आत्मिक शान्ति भी मिली कि नहीं? वह बोला आत्मिक शान्ति तो मुझे नहीं मिली। इस चीज़ को पाना है तो दासाभाव पैदा करो महर्षि दयानन्द की तरह। स्वामी बिरजानन्द जी ने कहा कि यह जो किताबें बगल में लिए फिरते हो इन्हें जमना में फेंक आओ। उन्होंने चूं चरां नहीं की। किताबें दरिया में फेंक आए तो स्वामी बिरजानन्द जी ने फरमाया कि जो बात मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं वह इन किताबों से समझ नहीं आनी थी।

अनुभवी पुरुष जो बात कहता है उस पर अमल करो, पहले Theory को, सिद्धान्त को अच्छी तरह से समझ लो। जो लोग बुद्धि के [illegible] में आ गए वह एक चीज़ का Why and wherefore, क्यों और क्या, एक बात के सारे पहलू सोचे समझे बगैर आगे गदम नहीं उठा सकते। वैसे पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़, रास्ता दोनों को एक है। वह रास्ता क्या है? इन्द्रियों से हटना और मन को खड़ा करके सुरत को, आत्मा को, पिण्ड से ऊपर लाना। जो बुद्धि के फैलाव में हैं उन्हें ज़रा देर लगती है। अनपढ़ सीधा जाता है। बुद्धि विचार से मदद ले लो बात समझने के लिए। आगे अमल का मज़मून है। बात समझकर फिर उस पर अमल करो। थोड़ा तजरबा मिलने पर आपको यकीन हो जायेगा। साधु की संगत करो।

St. Augustine (सेंट आगस्टिन) ईसाईयों में एक महात्मा हो गुज़रे हैं। उनसे पूछा गया कि परमात्मा कैसे मिलता है तो उन्होंने कहा कि इसके लिये तीन चीज़ें ज़रूरी हैं। First humility, second humility, third humality पहली चीज़ है नम्रता, दूसरी चीज़ फिर नम्रता और अन्त में फिर नम्रता। नम्रता [illegible] ज्ञान पाने के लिए ज़रूरी है। जो हकूमत, दौलत या विद्या के नशे में चूर है, वह किसी महात्मा के पास जाता ही नहीं। यदि यह विचार मन में बैठ जाये कि हम सब कुछ जानते हैं तो फिर कुछ सीखने के लिए हम किसी के पास

जाएं ही क्यों? अब वहां जाकर भी यदि नम्रता हो तभी कुछ सीख प्राप्त कर सकता है। प्याला सुराही के नीचे हो तभी पानी ले सकता है। सुराही के ऊपर रहकर नहीं। अब महात्मा की दया से अन्तर में रसाई हो जाए फिर भी नम्रता ज़रूरी है। वह यही कहता है कि यह उसकी, गुरु की, बरकत है। फलदार पेड़ की टहनियाँ झुकी रहती हैं। नम्रता सन्तों का श्रृंगार है।

जिससे कोई काम सीखना है उसका कहना मानो। बाहर का इल्म सीखना हो अथवा अन्तर का, गुरु का कहना मानना होगा। गुरु तुम्हें नाम का तजरबा, उसका परिचय देता है। वह साथ में मदद भी देता है। बाहर भी और अन्दर भी। जो उपदेश दिया और किनारे हो गए सन्तों ने उन्हें का नाम गुरु नहीं रखा। गुरु की सन्तों ने और ही तारीफ की है:

बातो बाशद अज़ मकानों लामकाँ

वह यहां शारीरिक जगत् में भी तुम्हारे साथ है और मर कर जहां जाओगे वहां भी तुम्हारे साथ है। गुरबाणी कहती है:

साध प्रभु भिन्न भेद न भाई॥

वह प्रभु में अभेद हो गया। उसमें और प्रभु में कोई भेद नहीं रहता।

सो फरमाते हैं श्री गुरु अर्जुन साहब कि नाम का Contact (सम्पर्क) इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर ही मिलेगा। जो उससे जुड़ा हुआ है वह तुम्हें भी इन्द्रियों से ऊपर लाकर उससे जोड़ सकता है। इस दौलत को पाना है तो अनुभवी साधु के पास जाओ।

(4) नानक से दर सोभावन्ते, जो प्रभ अपने कीयो॥

अब फरमाते हैं कि जिनको प्रभु ने अपना लिया वे मालिक की दरगाह में शोभा पा गए। दुनिया में भी उनकी शोभा होती है और मालिक की दरगाह में भी वह शोभा पा गए। कबीर साहब के माता पिता का नाम कौन जानता है? लेकिन कबीर साहब का नाम हर एक की ज़बान पर है। हज़रत मसीह के पिता का नाम भी लोगों को पता नहीं। श्री गुरु नानक साहब के पिता का नाम कुछ सिखों को छोड़कर आम दुनिया को मालूम नहीं। लेकिन गुरु नानक का नाम चौकुण्ठी गूंज रहा है। यह सब नाम की महिमा है। जिन्होंने नाम का रस पी लिया, जो नाम में जाग

उठे, जो नाम से मिलकर अनाम में समा गए, यह उनकी महिमा है।

सच्चे मारग चलदेयां उस्तत करे जहान॥

यहां तो यह मज़मून ब्यान किया कि विषय विकार के रस फीके हैं। नाम से जुड़ो जो तुम्हारे अन्तर में है और जिसमें महारस है। उसका अनुभव First hand experience उसका Contact (सम्पर्क) किसी साधु के पास मिलेगा। ऐसे अनुभवी पुरुष के पास जिसे मालिक ने अपना लिया है।

साध रूप अपना तन धारेया॥

जिसे साधु ने अपना लिया उसे मालिक भी अपना लेता है। फिर उसकी यहां भी शोभा है और वहां भी शोभा है और वहां मालिक की दरगाह में भी।

दस्ते ऊ दस्ते खुदा, चश्मे ऊ मस्ते खुदा।

उसका हाथ परमात्मा का हाथ है, उसकी आंख में प्रभु की झलक है। इसलिए कहाः

गुरु राजी तो कर्ता राजी

यह तो एक पहलू ब्यान किया। अब दूसरा पहलू इन्द्रियों के रसों भोगों का खोल के ब्यान करते हैंः

(5) हर चिन्दौरी चित्त भ्रम सखिये, मृग तृष्णा, द्रम छाया॥

अब उदाहरण देकर समझाते हैं कि जो दुनिया के रसों भोगों में लम्पट हो रहे हैं उनकी हकीकत क्या है? चिंदौरी कहते हैं झूठी रचना अर्थात् गन्धर्वों की दुनिया को। जैसे आकाश पर बादलों की तरह तरह की शक्लें बनती रहती हैं, कभी मकान, कभी पहाड़, कभी घोड़े, कभी हाथी, अब वे वैसी तो नहीं जैसी दिखाई देती हैं, ये शक्लें बदलती रहती हैं। इनकी असलियत कुछ भी नहीं। यह दुनिया बदल रही है। हमारा शरीर भी बदल रहा है। वह एक रस नहीं रहता। The world is changing दुनिया का कण कण बदल रहा है। यह हकीकत है पर हमारी समझ में नहीं बैठ रही। यह बात सत्य है पर हमें सत्य होकर नहीं भास रही। हम इस भ्रम में भूल रहे हैं। सो फरमाते हैं, तेरा चित्त भ्रम में फंस गया है। भ्रम क्या है? चीज़ कुछ है, नज़र कुछ और आ रही है। यह भ्रम है। इस भ्रम का

कारण क्या है? हमारा शरीर और दुनिया दोनों एक रफ्तार से बदल रहे हैं। इसलिए दोनों हमें सत्य भास रहे हैं। जैसे किश्ती दरिया के बहाव के रुख से बही चली जा रही हो। पानी जिस रफ्तार से बह रहा है किश्ती भी उसी रफ्तार से बही चली जा रही है। पानी और किश्ती की रफ्तार एक है। इसलिए पानी खड़ा मालूम होता है और किश्ती भी। अब एक आदमी किश्ती से निकल कर बाहर किनारे पर आकर खड़ा हो जाए तो वह देखता है कि किश्ती भी बह रही है और पानी भी। वह कहता है किश्ती में बैठे लोगों से कि भाइयों तुम बह रहे हो। वे कहते हैं, हम कहां बह रहे हैं? हम तो खड़े हैं। यही भ्रम है जिसमें सारी दुनिया बही चली जा रही है। शरीर का कण-कण बदल रहा है। उसी रफ्तार से जगत् का कण-कण बदल रहा है। परन्तु हमें यह शरीर भी सत्य भास रहा है और यह जगत् भी। लाख कहते रहो भाई यह शरीर हमेशा रहने वाला नहीं, मगर यह हकीकत हमारे मन में बैठती नहीं। अपने जैसे शरीर को कन्धे पर उठा कर हम श्मशान भूमि में फूंक आते हैं फिर भी यह हकीकत हमारे मन में बैठती नहीं। सो फरमा रहे हैं कि चिन्दौरी की यह दुनिया बदल रही है। जगत असत्य है। आत्मा सत्य है। सब वेद शास्त्र धर्म ग्रन्थ यह कह रहे हैं।

साधो एह तन मिथ्या जानो॥
या भीतर जो राम बसत है, साचा ताहि पछानो॥

मिथ्या का मतलब यह नहीं कि वह है ही नहीं। मिथ्या का मतलब है कि वह हमेशा रहने वाला नहीं। वह नाशवान है। इसमें जो अविनाशी वस्तु है वह हमारी आत्मा है।

सन् 1908-09 का ज़िक्र है। मैं उन दिनों नवीं श्रेणी में पढ़ता था। लाहौर में बाहर बाग में पढ़ रहा था वहां श्री देवगुरु भगवान् के लड़के से भेंट हुई। वह बोला- "What do you think of our movement? (हमारे मिशन के बारे में आपका क्या ख्याल है?) मैंने उत्तर दिया, "I appreciate all that you have done in regard to practical living but what do you think about the ultimate consummation of Soul?" (आपने सदाचार के जीवन के बारे में जो शिक्षा दी है उसकी मेरे दिल में कद्र है परन्तु आत्मा के बारे में आप क्या कहते हैं?) श्री देवगुरु भगवान् के बेटे ने कहा, "It lives on for sometimes and gradually dies out." (आत्मा शरीर की मृत्यु के पश्चात् कुछ

समय तक जीवित रहती है फिर वह भी खत्म हो जाती है।) मैंने कहा, आत्मा मरती नहीं। वह एक ऐसा सूक्ष्म रूप धारण कर लेती है, जिसके बारे में अभी तुम कुछ नहीं जानते।''

आत्मा अमर है। शरीर नाशवान है, वह यहीं रह जायेगा। अन्त में यह शरीर छोड़ना पड़ेगा, सबको एक दिन यहां से जाना पड़ेगा। कौन रहा है यहाँ? कौन रह सकता है? शरीर और इसके सम्बन्धों को और बढ़ाने के लिए हम सब कुछ कर रहे हैं परन्तु अपनी आत्मा के लिए हम कुछ नहीं करते। सरदार आत्मा सिंह नामधारी जिनका अभी थोड़े दिन हुए देहावसान हुआ, उन्होंने मत-मतान्तरों के भेद-भाव के बगैर सबकी सेवा की थी। मौत से पांच दिन पहले मैं अस्पताल में उनसे मिलने गया। वे रो पड़े। कहने लगे, ''मैंने दुनिया भर के लिए सब कुछ किया, पर अपने लिए क्या किया? ''मैंने कहा, ''घबराओ नहीं।'' इसके बाद उनकी मौत से दो दिन पहले मैं उनसे मिलने गया तो वे बोले, ''बड़ी-बड़ी दुनिया आबाद है अन्तर में। यहां तो बड़े-बड़े गुरु, महात्मा आ गए।'' मैंने कहा, ''तुम्हारा सबसे दिली प्यार था, इसलिए अन्तर में सब महात्मा आ गए।''

हम सारी उम्र दुनिया के धन्धों में, दूसरों के काम में लगे रहते हैं, उम्र यूं ही गुज़र जाती है। जब सब कुछ छोड़कर जाने का समय आता है उस वक्त होश आती है। अन्त समय कोई महात्मा दया करे तो करे वरना जीवन बरबाद चला गया। अगर हम जीते जी अपना काम पूरा कर लें, पिण्ड से निकलना सीख जाएं, जीवन की गुत्थी सुलझा लें, तो कितनी अच्छी बात है। कौमें, समजें सब मुबारिक हैं। जिस समाज में तुम रहो, तुम्हें मुबारिक। किसी भी समाज में रहो मगर सबसे प्यार रखो।

अब एक मिसाल तो चिन्दौरी की दी, दूसरी मिसाल और देते हैं, हिरन की। जैसे रेत और धूप की चमक दूर से पानी दिखाई देती है पर वास्तव में वह पानी नहीं, हिरन पानी के धोखे में उसके पीछे भागता है। वहां पानी कहाँ? यही हाल दुनिया का है। मनुष्य एक चीज़ के साथ लगता है कि इसमें सुख है। वहां भी सुख नहीं। फिर किसी दूसरी चीज़ में सुख को ढूंढता है। वहां भी सुख नहीं मिलता। अब इस विषय को और स्पष्ट करने के लिए एक और उदाहरण देते हैं, पेड़ की छाँव की। सूर्य का रुख बदलता है तो छाँव भी बदल जाती है। जहां छाँव थी वहां धूप आ जाती है। गन्धर्वों की सृष्टि की, हिरन की और पेड़ की छाँव की मिसालें देकर एक बात को किस खूबी और

सफाई के साथ खोल खोल कर समझाया है। हम मारा मार करते हैं कि दुनिया में सुख मिले। दुनिया में किसी चीज़ में सुख नहीं मिलता। सुख है तो नाम में। तुलसीदास जी फरमाते हैं:

सुखी सन्त का दास

पहले ज़िक्र आया है कि दासाभाव लेकर अनुभवी पुरुष के पास जाओ तो नाम की दौलत मिलेगी। सन्त का दास क्यों सुखी है? आगे जवाब देते हैं:

तुरत मिलावें नाम से उन्हें मिले जो कोय।

सुखी होने का साधन केवल नाम है। नाम से तभी जुड़ सकते हो यदि किसी जुड़े हुए की संगत नसीब हो। नाम का ताल्लुक कब मिलता है? यदि दासाभाव लेकर पूर्ण पुरुष के पास जाओ।

(6) चंचल संग न चालती सखिये, अन्त तज जावत माया॥

फरमाते हैं कि दुनिया किसके साथ गई। यह चंचल है, सदा एक रस रहने वाली नहीं। बड़ी मेहरबानी करेगी तो मौत तक साथ रहेगी। अन्त में छोड़ जायेगी। हम दुनिया में तन्मय होकर, लीन होकर, परमात्मा को भूले हुए हैं। जो असत्य वस्तु है वह सत्य भास रही है हमें। यही द्वैत है। आंख कब खुलती है? कबीर साहब फरमाते हैं:

कहत कबीर तेही नर जागे, जब जम का डंड मूण्ड में लागे।

अन्त समय होश आती है। रोता है, पछताता है। अब पछताने से क्या होता है? इसका मतलब यह नहीं कि दुनिया छोड़ जाओ। अपना फर्ज़ पूरा करो। बाल-बच्चों को पालो। उनके अन्तर में भी परमात्मा है लेकिन ये सब एक दिन तुम्हें छोड़ जाएंगे या तुम इन्हें छोड़ जाओगे या ज़बरदस्ती छुड़ा दिये जाओगे इनसे। इसी लिये सब महात्मा कहते चले आ रहे हैं कि अपने आपको जानो, Know thyself. तुम शरीर नहीं, तुम आत्मा हो। तुम शरीर के इस मकान के मकीन (निवासी) हो। अपने आपको जानो और प्रभु को पहचानो। आत्मानुभाव हो तभी प्रभु को भी जान सकोगे। परमात्मा को अनुभव करना है तो आत्मा ने, न शरीर ने, न प्राणों ने, न मन ने, न बुद्धि ने। आत्मानुभव हो, अपने आपकी पहचान हो, तभी

परमात्मा का अनुभव प्राप्त कर सकोगे। हर इन्सान को यह गुत्थी सुलझानी है। दुनिया के सारे काम करो मगर यह काम भी कर लो। मनुष्य शरीर रखता है, बुद्धि रखता है और आत्मा भी रखता है। शरीर के लिहाज़ से हमने काफी तरक्की की है। बुद्धि के लिहाज़ से भी, समाज धर्म में, राजनीति में, तर्क वितर्क में हम बहुत आगे बढ़ चुके हैं, बहुत कुछ जानते हैं, पर अपनी आत्मा के बारे में हम क्या जानते हैं?

बस इतना कुछ ही जानते हैं कि अमुक महात्मा यह कहता है। अमुक ऋषि यह कहता है। भाई तुम्हारा अपना तजरबा क्या है? तुम क्या कहते हो?

कभी पिण्ड से, शरीर से ऊपर आए? अन्तर की आंख खुली? परमात्मा ज्योति स्वरूप है। उसकी ज्योति का प्रकाश देखा? मरते समय आदमी के साथ में दीवा थमा देते हैं और प्रार्थना करते हैं कि इस दीवे की ज्योति इसकी सहाई हो। दीवा भी यहीं रह जाता है, दीवा पकड़ने वाला हाथ भी। जीते जी दीवा न मनसा गया, अन्तर में ज्योति का प्रकाश न देखा तो क्या बना?

महात्मा किसी का खण्डन मण्डन नहीं करते। वे किसी रस्म रिवाज़ को छेड़ते नहीं। वे कहते हैं जीते जी जीवन की गुत्थी सुलझा लो। किसी समाज में बैठकर, कहीं भी रहकर यह काम कर लो। वे समाजों के गुरु नहीं, वह जगत गुरु होते हैं। उनके लिए सब इन्सान आत्मा देहधारी हैं। वह कुल इन्सानों को एक नज़र से देखते हैं। सब समाज उनके अपने होते हैं। गुरवाणी कहती हैः

सतगुरु ऐसा जाणिये, जो सभसे लये मिलाए जियो॥

वे सबको मिलाकर बैठते हैं। They are the children of light वे प्रकाश पुंज होते हैं। जब आते हैं सबको रोशनी दे जाते हैं।

(7) रस भोगन अति रूप रस माते, इन संग सुख न पाया॥

जो लोग इन्द्रियों के रसों और भोगों में लम्पट होकर जिस्म और जिस्मानियत का रूप बने बैठे हैं, वे सुखी नहीं। इन्द्रियों के भोगों और रसों में सुख नहीं। सुख है तो नाम में। जब तक इन्द्रियों के घाट से ऊपर न आओ, नाम का परिचय नहीं मिलता। नाम का ताल्लुक न मिले तो

सुख शान्ति कैसे हो? जो लोग जिस्म और जिस्मानियत का रूप बने बैठे हैं वे कभी सुखी नहीं हो सकते। इसी लिए कहा है:

नानक दुखिया सब संसार

महापुरुषों ने खोल खोल कर आत्म तत्व का, सत् का स्पष्टीकरण किया है। वे हर चीज़ को सत् की दृष्टि से, हकीकत की नज़र से देखते हैं जिसमें धोखा नहीं।

(8) धन धन हर साध जन सखिये, नानक जिन्नी नाम ध्याया।।

अब फरमाते हैं कि जिन साधुजनों ने हरि का नाम ध्याया, जो नाम पावर से लगकर प्रभु में समा गए, उनका दुनिया में आना धन्य है। वे आप भी सुखी हैं और जिन पर उनकी दया दृष्टि हो गई वे भी सुखी हो गए।

गुरमुख कोट उधारदा दे नावें इक कणी॥

(गुरबाणी)

वे अपनी तवज्जो का उभार (Life impulse) देकर आत्मा को पिण्ड से ऊपर लाकर नाम से जोड़ते हैं। ऐसे महापुरुषों का जीवन धन्य है। अपने लिए तो सभी काम करते हैं, उस आदमी का जीवन धन्य है जिससे दूसरों को लाभ मिले। शारीरिक तौर पर जिससे कोई लाभ मिले उसे सारी दुनिया याद करती है। जिससे आत्मिक लाभ मिले, जन्म मरण से मुक्ति मिले, उसकी महिमा कितनी है? गुरबाणी में आया है:

धन्न जणेंदी माए॥

वह माता भी धन्य है जिसने ऐसे महापुरुष को जन्म दिया जिसने सारे संसार का उद्धार किया। श्री गुरु रामदास जी ने तो यहां तक कहा है कि जो मनुष्य जन्म पाकर भी नाम से नहीं लगे, जिन्होंने जीवन की गुत्थी को नहीं सुलझाया:

तिन मात कीजो हर बाँझा

इन्द्रियों के रसों भोगों में लम्पट होकर जिन्होंने अपना जीवन बरबाद करना था उन्हें माता जन्म न देती तो अच्छा था। मनुष्य योनि सारी योनियों की सरताज योनि है। सबसे उत्तम खान कहा है इसे। इसमें आकाश तत्व

प्रबल है जिससे यह सत्य असत्य का निर्णय कर सकता है, अपने आपको जान सकता है और प्रभु को पहचान सकता है। यह काम मनुष्य जीवन में ही किया जा सकता है और प्रभु को पहचान सकता है। यह काम मनुष्य जीवन में ही किया जा सकता है और किसी योनि में नहीं। अगर मनुष्य जन्म पाकर भी पशुओं की तरह इन्द्रियों के भोगों और रसों में लम्पट रहे तो मनुष्य जन्म का क्या फायदा? कवि कहता है:

बिन दर हैवां के सर सूए जमी दारद, तू आदमी अस्त, सरबवाला कुन।

पशु को मत देख। पशु का सिर कुदरत ने ज़मीन की तरफ रखा है। तू तो आदमी है। तेरा सिर तो ज़मीन की तरफ नहीं। अपने शरफ (बड़प्पन) को संभाल। अगर इन्सान अपने शरफ को न संभाले तो वह पशु से गया गुज़रा है। मनुष्य और पशु के सारे काम एक से हैं। वे भी बाल बच्चों को पालते हैं, यह (मनुष्य) भी। वे भी सुख दुःख महसूस करते हैं, यह भी। दोनों को बच्चों का मोह है। मनुष्य और पशु में कोई अन्तर है तो केवल इतना ही कि मनुष्य अपने आपको जान सकता है, पशु यह काम नहीं कर सकता। अब आप सब लोग यहां इकट्ठे बैठकर एक बात पर विचार कर रहे हैं। पशु यह काम नहीं कर सकते। मनुष्य जन्म एक सुनहरी मौका है, एक Golden Opportunity है। मनुष्य जन्म पाकर भी वह काम न किया जो तुम्हें इस जन्म में करना था तो जीवन अकारथ चला गया कि नहीं? रोते सभी आए। यदि मनुष्य जन्म पाकर अपने आपको न जाना, प्रभु को न पहचाना, तो जाओगे भी रोते हुए ही। जिन्होंने मनुष्य जन्म पाकर अपना काम पूरा कर लिया, जीवन की गुत्थी सुलझा ली, वे हंसते हुए जाते हैं और दुनिया उनकी याद में रोती है। गुरु नानक साहब ने 'जपजी साहब' की एक कड़ी में इसका निचोड़ पेश किया है:

जिन्ही नाम ध्याया गए मुशक्कत घाल।
नानक से मुख उजले केती छुट्टे नाल॥

जिन्हें नाम पावर का Contact (संपर्क) मिल गया, जिन्होंने नाम का रस पा लिया उनके जीवन की सारी मुशक्कतें (मेहनत) सफल हो

गई, उनके मुख मालिक की दरगाह में उजले हो गए। वे मालिक के दरबार में शोभा पा गए और उनके साथ और कई जीवों का उद्धार हो गया। यह नाम की महिमा का बखान (वर्णन) है। यह अक्षरी नाम की महिमा नहीं। अक्षरी नाम तो हर कोई जप रहा है। अक्षरी नाम जिसका बोध करा रहे हैं, उसको जानने वाले, उसके अनुभवी कम मिलते हैं। ऐसे अनुभवी हर ज़माने में कम होते हैं। नाम का ताल्लुक मिलता कहां है? श्री गुरु नानक साहब से पूछा तो उन्होंने जवाब दियाः

जहाँ नाम मिले तहँ जाओ॥

फरमाते हैं, जहां से नाम का ताल्लुक मिले वहाँ से जाकर ले लो। यह अक्षरी नाम नहीं। नाम पावर का Contact (संपर्क) जहां मिले, अन्तर में कोई नाम पावर से तुम्हारी आत्मा को जोड़ दे, वह कोई भी हो, जो यह चीज़ दे सके, उससे जाकर ले लो। आगे फरमाते हैंः

गुर प्रसादी कर्म कमावे॥

वह नाम पावर घट-घट में मौजूद है। है आप में, मगर इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर उसका ताल्लुक मिलता है। जो अपने आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर उससे लग सके वह मुबारिक है, मगर इन्द्रियों के घाट के साधन करते हुए उससे लगना असंभव है। इन्द्रियों के घाट पर बैठे हुए जिसके इतना होश नहीं कि मैं शरीर हूं या शरीर से अलेहदा भी कोई चीज़ हूँ, वह अपने आप पिण्ड से ऊपर आकर नाम से कैसे लग सकता है? इसके लिए तो किसी अनुभवी के पास जाना होगा। मनुष्य-मनुष्य से ही सीखता है। इसमें शर्म की क्या बात है?

समाजों के जो नियम बनाये गये उनका उद्देश्य भी यही था कि मनुष्य सदाचार का जीवन व्यतीत करते हुए अपने आपको जाने और प्रभु को पहचाने। दशम् गुरु साहब ने खालसा की तारीफ क्या की है?

पूर्ण जोत जगे घट में, ताहि खालस ताहि नखालस जानो।

जिसमें पूर्ण ज्योति का विकास है, जो अन्तर में मालिक की ज्योति को देखता है, वह खालसा है। फिर आगे और तारीफ करते हैंः

खालसा मेरो रूप है खास, खालसा में हौं करूं निवास॥
खालसा मेरो सतगुरु पूरा, खालसा मेरो सज्जन सूरा॥

कितनी बड़ी तारीफ़ है खालसा की। इस तरह के दस पांच खालसा मिल जाए तो रंग बन्ध जाए।

खालसा की जो तारीफ दशम् गुरु साहब ने की है, जो लक्षण खालसा के बताये हैं, वैसे खालसा आज कहां मिलते हैं। जब हालात बिगड़ गये, दोस्त दुश्मन की तमीज़ न रही, दशम् गुरु साहब ने फरमाया, मुझे सिर चाहिये। कोई ऐसा है जो सिर दे सके? इतिहास बताता है कि एक के बाद एक, पांच प्यारों ने अपने सिर पेश किए। सिर काट कर बाद में फिर जोड़े या नहीं जोड़े, इससे गर्ज़ नहीं हमारी। वैसे समर्थ पुरुष क्या नहीं कर सकता? कहने का मतलब यह है कि इस रास्ते में सिर देना पड़ता है।

सिर दीजे काण न कीजे

फिर कहा है-

जो तोहे पिया मिलण की चाओ, सिर धर तली गली मेरी आओ।

जो सिर सलामत रखना चाहे उसकी यहां रसाई नहीं। वह सिर देकर ही, पिण्ड से ऊपर आकर ही उसे पा सके ऐसा एक भी खालसा मिल जाए तो मैं उसके पांव धोकर पीने को तैयार हूं। जिसके अन्तर में पूर्ण ज्योति का विकास है, जो अन्तर में परमात्मा की ज्योति को, Light of God को देखता है, वही सच्चा सिख है, वही सच्चा हिन्दू है, वही सच्चा मुसलमान है। मोमिन की भी तो यही तारीफ की गई है कि वह अन्तर में खुदा ने नूर को देखने वाला हो। सारी समाजें परमात्मा की फौज भरती करने के लिए बनाई गई थीं। बात कुछ और थी, बन कुछ और गई। परमात्मा की फौज भरती करने की बजाये समाजों की फौजें भरती होने लगीं। महात्मा समाजों की फौज़ भरती नहीं करते। वे परमात्मा की फौज़ के सिपाही भरती करते हैं।

(9) जाय सो बड़भागी सखिये, सन्ताँ संग समाए॥

अब फरमाते हैं कि आप बड़भागी पुरुष बनना चाहते हैं तो जाओ संतों की संगत में:

सन्त समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोए।

दुनिया में कोई चीज़ दुर्लभ है तो सन्तों की संगत। फरमाते हैं, सन्तों की संगत में जाकर समा जाओ। हर तरफ से हट हटाकर यकसू (एकाग्र) होकर वहां बैठो और उस मंडल में जाकर लीन हो जाओ। सन्त किसी भेस का नाम नहीं। सन्तों की तारीफ की गई है कि:

हमरो भरता बड़ो विवेकी, आपे सन्त कहावे॥

वह प्रभु की ताकत जिस इन्सानी पोल में (घट में) प्रकट होकर काम करती है उसका नाम है सन्त।

पीपा प्रणवे परम तत्त है, सतगुरु होय लखए॥

वह परम तत्व है। सत्गुरु के स्वरूप में आकर वह लोगों को परम तत्व लखवाता (अनुभव कराता) है। इसी लिए फरमाते हैं, सन्त के पास जाओ।

सन्त क्या कहता है? वह कहता है तुम शरीर नहीं, आत्मा हो। आत्मा प्रभु की अंश है। इसे मन इन्द्रियों से अलग करके पहले आत्मा को जानो और फिर प्रभु में समा जाओ। यहां So-called (तथाकथित) साधु सन्तों की बात नहीं हो रही। यह इसलिए कहना पड़ता है कि जो लोग वास्तव में उस गति को नहीं पा चुके, मगर लोगों की नज़र में अपने आपको भी धोखा दे रहे हैं और दुनिया को भी भ्रम में फंसा रहे हैं। ऐसे लोगों की संगत करोगे तो इन्द्रियों के घाट पर रहोगे। जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आया, वह लाख ज्ञान ध्यान छांटता फिरे, जो चीज़ इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर मिलती है उसका अनुभव नहीं दे सकता और श्री गुरु अर्जुन साहब ऐसे अनुभवी महापुरुषों की महिमा कर रहे हैं जिन्होंने अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों से आज़ाद करके अपने आपको जाना और प्रभु में समा गए। जो सत् पद को प्राप्त कर चुके हैं, जो मालिक में अभेद हो गए यह उन महापुरुषों की महिमा है।

(10) तहाँ दुःख न भूख न रोग व्यापे, चरण कमल लिव लाए॥

अब फरमाते हैं कि अगर तुम सन्तों की संगत में जाओ, जो शिक्षा वे देते हैं उसे धारण करो तो तुम सुखी हो जाओगे। तुम्हारे अन्तर में सन्तुष्टि होगी। भूख प्यास तुम्हें आतुर, परेशान नहीं करेगी। रोटी मिली खा ली, न मिली तो कुछ ऐसी परेशानी नहीं। इन्द्रियों के भोगों से ऊपर आकर हर वक्त एक ठंडक, एक सन्तुष्टि महसूस करोगे। इन्द्रियों का घाट छूटा तो रोग से भी बचोगे। रोग भी अधिकतर भोगों का फल हैं। सो फरमाते हैं कि तुम्हें परमार्थ का लाभ मिलेगा यदि तुम सन्तों के चरणों में लिव (नेह) लगाओगे।

इसीलिये कहा हैः

सुखी सन्त का दास

(11) तहां जन्म मरण न आवण जावण नेहचल शरणी पाए॥

यह सब कुछ तो यहां दुनिया में मिल गया। आगे जन्म मरण के बन्धन से भी मुक्त हो जाओगे और नेहचल स्थान को पा जाओगे। यहां भी सुखी वहां भी सुखी। यदि हमेशा के इस सुख को पाना है तो दासाभाव लेकर सन्तों के पास जाओ और उनके चरणों में समा जाओ। मतलब यह कि उनके कहने के अनुसार जीवन को बनाओ, नाम की कमाई करो। फिर जिस्म जिस्मानियत के ताल्लुकात तुम्हें उलझायेंगे नहीं, न दुःख और रोग तुम्हें सतायेंगे। तुम अपने आप में जाग जाओगे, प्रभु को पा जाओगे। अनुभवी पुरुष तुम्हें नाम पावर से जोड़ेगा, उसका Contact (सम्पर्क) देगा, पूर्ण युक्ति देगा। साथ में थोड़ा अनुभव देगा। साधन करके उसे और बढ़ाओ और उसके मण्डल में, उसके वचनों में Charging का असर है। उसके मण्डल में तुम्हें टिकाव, एकाग्रता और शान्ति मिलेगी। यह सब नाम की महिमा है।

जिस नीच को कोऊ न जाने, नाम जपत चौकुंठी माने॥

बताओ रविदास जी के पिता कौन थे? मीराबाई के माता पिता का नाम कितने लोग जानते हैं? पीपा राजा, सदना कसाई, सैना नाई, कबीर साहब जुलाहे और रविदास जी चमार, उनके नाम आज सबकी ज़बानों पर हैं। यह किसकी महिमा है? यह नाम की महिमा है। वह नाम रूप

थे, जैसा कि हज़रत मसीह फरमाते हैं : Word was made flesh and dwelt amongst us. (वह नाम सदेह होकर हमारे बीच रहा)। जो सदेह शब्द है वही तुमको भी शब्द के साथ जोड़ सकता है।

(12) प्रेम विछोह न मोह व्यापे, नानक हर एक ध्याए॥

अन्त में फरमाते हैं कि तुम उस मालिक को ध्याने वाले बन जाओगे। उससे जुड़े रहोगे। उसमें समा जाओगे। प्रेम में जो वियोग का दुख है वह तुम्हें देखना नहीं पड़ेगा। विरह में व्याकुलता है, जलन और तड़प है, उसमें भी रस है पर वियोग का दुख तो है ही। कहते हैं यहां वियोग का दुख भी न होगा। प्रभु भक्तों की वाणी में विरह की व्याकुलता का जगह-जगह वर्णन आया है, इसीलिए कहा है कि:

जिन पाया तिन रोय

फरमाते हैं कि यहां जुदाई का दुख भी रहेगा और जिस्म से ऊपर आने लगे तो जिस्म का मोह भी न रहेगा। जिस्म का मोह न रहा तो जिस्म के ताल्लुकात का मोह कैसे रह सकता है? यहाँ एक नई बात ब्यान की है कि प्रेम में भी वियोग का दुख, विरह का सन्ताप होता है। यहाँ वह दुख भी न रहेगा।

(13) दृष्ट धार मन बेध्या प्यारे, रतड़े सहज समाए॥

जो उस एक के ध्याने वाले बन गए यह उनकी अवस्था है। हम हद के अन्दर हैं। वह बेहद है। हम हद की Terms में, अपने पैमानों में, नपे हुए शब्दों में उसे कैसे ब्यान कर सकते हैं?

तूं बेअन्त हौं मित कर वरणूं, क्या जानूं होय कैसो रे॥

एक कहना भी तो उसे Finite terms में बयान करना है। गुरबाणी में इसका निर्णय किया है।

उस एके का जाणे भेयो, सोई करता सोई देयो॥

इस एके के पीछे भी एक भेद है। जो इस भेद को पा गया वह हकीकत को पा गया।

एक कहूं तो है नहीं, दो कहूं तो गार।
जैसा है तैसा रहे, कहे कबीर विचार॥

कबीर साहब फरमाते हैं कि वह एक है तो कहने वाला कहां रहा?

दो कहुं तो यह गाली है। वह अपने आपमें कुछ है जो कहने सुनने में नहीं आ सकता। सो फरमाते हैं गुरु अर्जुन साहब कि वह दृष्ट धार होकर सबको देख रहा है।

सच खण्ड बसे करतार॥ कर कर वेखे नदर निहार॥

वह दृष्ट धार, वह नज़र निहार कर रहा है। दृष्ट धार रहा है। इस दृष्ट धार में रस है। इसमें मन ज़ख्मी हो जाता है। वह भागने के काबिल नहीं रहता। मन बेधा जाता है इस दृष्ट धार से। वह मस्त हो जाता है और हम सहज में मालिक के रंग में रंग जाते हैं। सो फरमाते हैं सन्तों की शरण में जाने वाला ऐसी गति को पा जाता है। एक चीज़ को ब्यान करने का तरीका है। कहीं इस अवस्था को ऐसे ब्यान किया है जैसे कपड़ा तेल या किसी रस में लितड़ा जाए।

ओत पोत रवेया हरि रंग

हम रस के भरे हुए लितड़े (कपड़े) बन जाते हैं। उस आंख के खुलने का सवाल है जिससे प्रभु का दर्शन किया जाता है, जो उसे देख सकती है।

चोले जिन्हाँ दे रत्तेड़े कन्त तिन्हाँ के पास॥

बात कहने का अपना ढंग है। मगर वह अवस्था अवर्णनीय है, कहने सुनने से परे है। वह तो अनुभव करने की चीज़ है।

(14) सेज सुहावी संग मिल प्रीतम, आनन्द मंगल गुण गाए।

अब फरमाते हैं कि मालिक से मिलाप हो गया तो यह उस प्रीतम से मिलकर सुख भोग रहा है। यह आनन्द में लीन होकर उसके गुणावाद गा रहा है। महात्मा प्रभु का गुणगान करे तो उसके गाने और दूसरों के गाने में बड़ा अन्तर है। उसके गाने में मस्ती का असर है। जो लोग उसे सुनते हैं उन्हें भी रस मिलता है। जिसने हरि का रस लिया नहीं, उसके गाने बजाने में रस कहां? महात्मा की संगत में यही एक चीज़ है जो दुनिया को मिलती है। इसीलिए कहा है:

महापवित्र साध का संग॥ जिस भेटत लागे हरि रंग॥

ग्रन्थों और पोथियों में इस चीज़ का केवल ज़िक्र है, वह चीज़ मिलेगी किसी अनुभवी पुरुष से। आंख आंख से यह नशा दिल में उतर जाता है। चैतन्य महाप्रभु एक महात्मा हुए हैं। उनका बोला (नारा) था, "हरि बोल"।

एक बार वह धोबी घाट से गुज़रे और नारा लगाया, "हरि बोल"। वहां जो धोबी खड़ा था, उसने समझा कोई मांगने वाला है, ध्यान न दिया। उन्होंने फिर कहा "हरि बोल"। दो चार बार यही नारा सुनने के बाद धोबी ने तंग आकर कहा "नहीं बोलता। जा जो करना है कर ले।" चैतन्य देव ने धोबी पर नज़र डाली और कहा, "हरि बोल"। धोबी बे-अख्तियार पुकार उठा, "हरि बोल" और साथ ही मस्त होकर नाचने लगा, साथ वाले धोबियों के कानों में यह आवाज़ पड़ी तो वह भी पुकार उठे, "हरि बोल" और मस्त होकर नाचने लगे। सारा धोबी घाट नाचने लगा।

आत्म-रस कोई मामूली चीज़ नहीं। इसे पाकर तन मन की सुधि बिसर जाती है। जिसके अन्तर में मालिक के प्रेम का नशा नहीं, उसके गाने बजाने में यह असर कहाँ? जिन्हें पेट का नशा है, जिन्हें दुनिया का नशा है, उनके शब्दों में मस्ती का रंग नहीं। जिनके अन्तर में यह मस्ती है, उनकी तवज्जौ का उभार धरती से उछलता है, जिस्म और जिस्मानियत से ऊपर लाता है। जो उससे जुड़ा हुआ है वह तुम्हें भी उससे जोड़ सकता है। जो जिस्म और जिस्मानियत में फंसा हुआ है। जो मालिक से टूटा हुआ है वह दूसरे को भी तोड़ देता है।

साकत का बोल्या ज्यों बिछुवा डसे।

साकत कहते हैं मालिक से टूटे हुए को। मालिक के और उसके बीच तकता है, दूरी है मालिक से उसकी, जहां प्रभु का रस नहीं केवल यथार्थ का रस है, ऐसे लोगों के वचनों में ठण्डक कहाँ? उनके शब्दों में बिच्छू के डंक का असर होता है। बिच्छू जब डंक मारता है तो मामूली सा दर्द होता है पर पीछे भारी कड़वल पड़ते हैं। ऐसे साकत लोगों के बारे में कबीर साहब फरमाते हैं कि उनके आस पास न बैठिये। इन्हें देखौं तो दूर से भागो। संगत का बड़ा असर होता है। बुरे का संग दोष होना आवश्यक है। दूर से इसका असर होता जाता है। जिसका जैसा हृदय है वैसा ही असर उसके वचनों में होगा। Out of the abudance of heart a man speaks.

हृदय में जो चीज़ बस रही है, अन्तर में जैसे विचार बस रहे हों मुख से जो वचन निकलें वह वही असर लिए होते हैं। सुनने वालों पर मन की भावना का असर ज़रूर पड़ता है। एक दुनियावी मिसाल है। पति

के गीत ब्याहिता भी गाती है और कँवारी भी मगर दोनों के गाने में बड़ा फर्क है। जो आत्म-रस का आनन्द ले रहे हैं उनके प्रभु का गुणानुवाद गाने में खास असर है, उनके वचनों में मस्ती का असर है।

(15) सखी सहेली राम रंग राती, मन तन इच्छ पुजाए॥

वह सखी सहेली जो राम के रंग में रत्त गई उसके मन तन की सब इच्छाएँ पूरी होती हैं। उस के मुख से कोई वचन निकले सही, प्रकृति उसे तत्काल पूरा कर देती है। कुदरत हाथ बांधे उसके इशारे की प्रतीक्षा करती है। Nature is at his beck and call.

पतंजलि ऋषि लिखते हैं कि योगीजन एक नया ब्रह्माण्ड खड़ा कर सकते हैं। आत्मा छोटी चीज़ है क्या? बहुत बड़ी हस्ती है इंसान की। Great is man, वह आत्मा देहधारी है। इसीलिए कहा है कि अपने आपको जानना, आत्मा को जानना, परमात्मा को जानना है।

(16) नानक अचरज, अचरज क्यों मिलिया कहन कछु न जाए॥

अचरज कहते हैं, हैरत को। स्वामी जी महाराज ने इस अवस्था को हैरत करके ब्यान किया है। आत्मा भी हैरत का मज़मून है। फरमाते हैं, आत्मा मन-इन्द्रियों से आज़ाद हुई तो हमने जाना वह हैरत का मज़मून है। यह हैरत, हैरत से, प्रभु से मिल गई। यह अवस्था क्या है? यह कहने सुनने का विषय नहीं। वह अवस्था अवर्णनीय है। हां सन्तों ने थोड़ा ब्यान करने की कोशिश की है और दुनिया की मिसालों से समझाने का यत्न किया है। श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं:

ज्यों जल में जल आए खटाना, त्यों ज्योति संग जोत मिलाना॥

जिस तरह जल की लहर आकर जल में मिल जाती है उसी तरह आत्मा की ज्योति प्रभु की ज्योति में समा जाती है। किसी ने कहा, "जैसे आग की चिंगारी उसी आग में लय हो जाती है। किसी ने कहा, "जैसे लोहे का गोला आग में पड़कर आग का रूप हो जाता है।" ये सब दुनियावी मिसालें (सांसारिक उदाहरण) हैं। वह अवस्था, वह गति क्या है, यह कहने सुनने का विषय नहीं, अनुभव की चीज़ है।

दुनियावी मिसाल है, दो हृदय प्रेम में एक हो जाएं और जिस्म जिस्मानियत से ऊपर उठ जाएं तो बताओ इस अवस्था को किन शब्दों

में ब्यान करोगे। दो कतरे मिलकर एक हो जाएं या एक कतरा समुद्र में मिल जाए तो इस अवस्था को कैसे वर्णन करोगे? यदि यह अवस्था कहने सुनने में नहीं आ सकती तो वह अवर्णनीय अवस्था कैसे वर्णन की जा सकती है। यह जो अवस्था है वह आदर्श है। यह कैसे पाया जा सकता है? इसके लिए इन्द्रियों के घाट से हटना होगा जब तक तुम इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैल रहे हो, तुन्हें अपने आपकी होश नहीं। तुम्हारे अन्तर में नाम का महारस है। परमात्मा परिपूर्ण का दिव्य अंश घट-घट में मौजूद है। तुम्हारी आत्मा (सुरत) इन्द्रियों के घाट पर लम्पट हो रही है। इनसे ऊपर उठे तो इसे अपने आपकी सूझत मिले। इन्द्रियों के रसों भोगों, संसार के विषय विकार को श्री गुरु अर्जुन साहब ने मृग तृष्णा, गन्धर्वों की दुनिया और वृक्ष की छाँव से उपमा दी है। ये एक रस रहने वाली चीज़ें नहीं। आत्मा चेतन है। उसे हमेशा का सुख महाचेतन प्रभु की गोद में ही मिलेगा।

सो फरमाते हैं इन्द्रियों के रसों-भोगों से हटो और अन्दर में नाम से लगो। उसमें महारस है। दुनिया की चातुरी ज्ञान, धन दौलत, बहादुरी इस रस को पाने में तुम्हारी सहायक नहीं होगी। यह रस तुम्हें अनुभवी पुरुष से ही मिलेगा। उस मंडल में जाकर समा जाओ। वहां न दुख है न रोग, न जन्म-मरण है, न आना जाना। वहां न प्रेम का वियोग है न मोह की नींद। वहां जाकर तुम उस अवस्था को पा जाओगे, जो अटल है, एक रस है, जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। वह मालिक दृष्ट धार कर रहा है। उसमें लीन होकर दुनिया की सुधि बिसर जाती है। उस तन्मयता में जो भी फुरना-फुरे वह तत्काल पूरी हो जाती है। प्रकृति ऐसे पुरुष के आगे हाथ बाँधे खड़ी रहती है, At beck and call रहती है। सन्तों की शरण में जाने और उनके आदेशानुसार जीवन बनाने में अचरज अचरज में मिल जायेगा। आत्मा महाचेतन प्रभु में समा जायेगी। वह गति, वह अवस्था अवर्णनीय है, कथनी से परे है। महात्माओं ने उदाहरण देकर समझाने का यत्न किया है पर वह अवस्था कहने सुनने में नहीं आ सकती। हम शब्दों को पकड़कर बैठ जाते हैं। उस गति को पाया नहीं। आत्म अनुभव किया नहीं। लफ्जों

की काँट-छाँट में लगे रहते हैं। यह अनुभव का मज़मून है।

यहाँ आप देखते हैं कभी किसी महात्मा की वाणी ली जाती है, कभी किसी की। हमें तो तात्पर्य को लेना है। जितने भी अनुभवी महात्मा हैं उनके कहने का तात्पर्य एक है। वे सब एक ही बात कहते हैं। हाँ बात कहने का ढंग अपना-अपना है। बात वही है, कोई एक ढंग से, कोई दूसरे ढंग से कहता है।बिजली का एक बल्ब फ्यूज़ हो गया उसकी जगह दूसरा बल्ब लग गया। रोशनी Light, तो एक है? जिस इन्सानी Pole पर परमात्मा की Power काम करती है उससे हज़ारों लाखों को परमार्थ का लाभ मिलता है। वह इन्सानी Pole, वह महापुरुष भी मुबारिक है जिसकी संगत के प्रताप से इन्द्रियों के घाट पर सोए हुए हज़ारों लाखों मनुष्य जाग उठते हैं। ऐसे अनुभवी महापुरुषों की संगत में दुनिया को एकाग्रता का रस मिलता है। मन को शान्ति, टिकाव मिलता है। ऐसे अनुभवी महापुरुष के चरणों में जाओ तो अहंकार और चातुरी को किनारे रख दो।

वहां जाकर उनसे नाम की दवा ले लो जिससे तुम्हारे सारे रोग, सोग और विकार दूर हो जायेंगे यदि तुम नाम की दवा लेकर उसे इस्तेमाल करोगे। वैसे नहीं। हमारे हज़ूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) फरमाते थे कि दवा ले जाकर जाले पर रख दी तो फायदा क्या होगा? यदि भूल से भी जुलाब की दवा खा लो तो उसका असर होता है।

हम लोग क्या कर रहे हैं? कहने को तो हम कहते हैं कि हम नाम से लग रहे हैं। ये तो केवल अक्षरी नाम है। ये अक्षरी नाम जिस घट घट व्यापी सत्ता का, नाम Power का, जिस करण कारण शक्ति का जो खण्डों ब्रह्माण्डों को बनाने वाली है और उन्हें धारण किए हुए हैं, का बोध कराते हैं उससे तो हम नहीं लगे। खाली अक्षरों के उच्चारण से क्या होता है? इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर उस नाम पावर से लगो तो तुम्हारा जीवन पल्टा खा जायेगा। आज दिन तक जो भी अनुभवी महापुरुष दुनिया में आ गए उन सबका यही उपदेश रहा है। आगे भी जो महापुरुष आयेंगे उन सबका यही उपदेश रहेगा।

यह उपदेश किन के लिये है? सारी मनुष्य जाति के लिए है किसी विशेष समाज या जाति या देश के लिए नहीं। समाज तो हमारे अपने बनाए हुए हैं, परमात्मा ने किसी को मोहर लगा कर नहीं भेजा कि यह हिन्दू है, यह मुसलमान। परमात्मा ने तो केवल इन्सान (मनुष्य) बनाए। इन्सान आत्मा देहदारी का नाम है। उनका उपदेश सबके लिए होता है। वे जगत गुरु होते हैं। किसी जाति या समाज के गुरु नहीं होते।

महापुरख साखी बोल दे, सांझी सकल जहाने॥

सबके लिए उनका एक ही उपदेश है। वे जब आते हैं, सारी दुनिया को रोशनी दे जाते हैं।

◆◆◆◆◆